B.A. I Hindi Hons.

'शरणदाता' कहानी का शीर्षक

~~डॉ॰ ...~~

ज्ञान कल्याणी।

शरणदाता शीर्षक कहानी मानवीय संवेदना को झकझोर देनेवाली कहानी है। इस कहानी में मुख्यतः दो ही पात्र हैं – देविन्दरलाल एवं रफ़ीकुद्दीन किन्तु एक तीसरा पात्र भी है जो कभी सामने नहीं आता किन्तु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका से कथानायक का जीवन ~~न~~ केवल सुरक्षित कर देती है वरन मानवीय संवेदना को जगाकर एक मिसाल भी प्रस्तुत कर ~~देती~~ देता है ~~और~~, वह तीसरा पात्र है जैबुन्निसा।

देविन्दरलाल इस कहानी का प्रधान पात्र है जिसके चारों ओर यह कहानी घूमती है। लाहौर उसका जन्मस्थल है अतः उस शहर से उसके जीवन के तार बहुत ही गहरे के साथ जुड़े हुए हैं। साम्प्रदायिकता के गहराते क्षणों में भी उन्हें उम्मीद है कि यह स्थिति अन्ततः सामान्य हो जाएगी और उन्हें अपना शहर नहीं छोड़ना पड़ेगा। किन्तु धीरे-धीरे स्थिति गंभीर होती जाती है। रफ़ीकुद्दीन के कहने पर वह शहर छोड़ने की संभावनाओं के पक्ष में बातें करता है। रफ़ीक उनके विचार के विपरीत उन्हें लाहौर में ही रहने की सलाह देता है सुरक्षा का आश्वासन भी देता है। देविन्दरलाल तो यही चाहते ही थे अतः वे वहीं रुक जाते हैं। किन्तु स्थिति गंभीर होने पर वे अपना घर छोड़कर रफ़ीक के घर चले जाते किन्तु वहाँ भी वे सुरक्षित नहीं थे अतः रफ़ीक उन्हें अपने मित्र के घर में रखवा देते हैं। उस एकान्त में से वे शहर की स्थितियों का आकलन करते हैं। वे मित्र शेख साहब के घर में रह रहे हैं वहाँ केवल घर वालों की बातचीत की अस्पष्ट आवाजें ही सुन पाते किसी को देख नहीं पाते। समय बहुत मुश्किल से कट पाता। उनके लिए शेख साहब के घर से खाना आता है वह कि बिलार को भी खिलाते हैं और उससे दोस्ती

स्थापित कर लेते हैं। रात में चारों ओर अल्लाहोअकबर की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। घरों को जलने से उठने वाले धुआँ का गुबार दिखलाई पड़ता है। ऐसे वातावरण में अगले दिन उनके खाने की रोटियों के बीच एक कागज के टुकड़े पर जहर की चेतावनी लिखी मिलती है वह खाना खाना बिलार को खिला देता है और फलत: बिलार मर जाता है। ऐसे में वहाँ रहना निरापद नहीं था। उसी रात वह वहाँ से भाग खड़ा होता है और भागते-भागते अमृतसर पहुँच जाता है। देविकलाल एक सरल और आस्थावान व्यक्ति है। उसके भीतर चपल जीजिविषा है। वह जितनी सरलता से रफीउद्दीन पर विश्वास कर लेता है उतनी ही आसानी से शेख साहब पर भी। वह मूलत: एक मनुष्य है। सामान्य मानव की समस्त विशेषताएं उसके चरित्र में घुली हुई हैं। साम्प्रदायिक घृणा के बीच भी वह अविचलित है। वह यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि साम्प्रदायिक घृणा की चरम परिणति हिन्दुओं की हत्या और लूट में परिवर्तित हो जाएगी।

रफीउद्दीन इस कहानी का दूसरा प्रधान पात्र है वह एक आदर्शवादी पात्र है। कहानी के आरंभ में वह मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित दिखलाई पड़ता है। किंतु धीरे-धीरे सामाजिक दबाव के समक्ष वह घुटने टेक देता है। वह कथानायक देविकलाल का मित्र है। वह बहुसंख्यक समुदाय का एक सम्मानीत सदस्य है। समाज में न केवल उसकी नैतिकता है वरन वह समय-समय पर समाज का मार्गदर्शन भी करता है। लाहौर में जब साम्प्रदायिकता की लहर में सारा शहर दग्ध होने